पाठ - 2
दादी की घड़ी

आइए सीखें - ■ कहानी कला से परिचय। ■ कार्य की सफलता में इच्छा-शक्ति का महत्व। ■ संयुक्त परिवार में आपसी समन्वय और प्रेम का महत्व। ■ निपात - प्रयोग। ■ वाक्य में पदक्रम का ज्ञान।

घर भर में सबसे छोटा होकर दीपू बड़ी मुसीबत में पड़ गया था। यूँ उसके दोस्त तो ईर्ष्या ही करते कि पूरे घर में वह सबका लाड़ला है, पर उसे इस बात की जरा भी खुशी नहीं थी। दिन भर तो उसे सबकी डाँट-डपट ही सुननी पड़ती थी, हर तरह की बेगार ढोनी पड़ती थी। इसके एवज में मम्मी या दादी थोड़ा-सा दुलार दे देतीं तो कौन-सी बड़ी बात थी! दीदी और भैया तो उसे बिना पैसे का नौकर समझकर दिन भर नचाते रहते। बहुत हुआ तो कभी एकाध टॉफी या रंगीन चॉक पकड़ा दी और छुट्टी!

ऐसे मौके पर वह सोचता काश, वह भी इन लोगों की तरह बड़ा होता तो घर में उसका भी कुछ रौब रहता भैया या दीदी बड़े क्या बन गए हैं, अपने आगे किसी को कुछ गिनते ही नहीं। मान लिया कि बड़ी-बड़ी क्लासों में पढ़ते हैं, पर इसका मतलब यह तो नहीं कि बाकी लोग निरे बुद्धू हैं। वाकई कम-से-कम दीपू के बारे में तो उनका यही ख्याल था। उन्हें इस बात की जैसे खबर ही नहीं थी कि दीपू भी अब बड़ा हो गया है, स्कूल जाता है, चौथी कक्षा में पढ़ता है और तो और अपनी कक्षा का मॉनीटर भी है। उनके लिए तो वही नन्हा-मुन्ना दीपू था कि जब चाहा प्यार कर लिया, जब चाहा डाँटकर भगा दिया।

अन्याय की हद तो यह थी कि मम्मी-पापा तक उन्हें कुछ नहीं कहते थे। छोटी वाली दोनों मेजें उन दोनों ने घेर रखीं थीं। अलमारियों पर भी उनका ही दखल था। दीपू बेचारे के हिस्से में आई थी एक खूँटी, जिस पर वह अपना बस्ता टाँगता। पढ़ने के लिए मेज तो दूर, एक डेस्क तक नहीं था। पापा कई बार उसका मन रखने के लिए अपनी मेज पर जगह कर देते। पापा के पास बैठने पर आधी जान तो वैसे ही सूख जाती थी, पढ़ाई क्या खाक होती! दीपू बेचारा मम्मी के ट्रंक पर ही गुजारा कर लेता।

दीदी-भैया जब पढ़ते होते, तो घर में कोई उसे ऊँची आवाज में बोलने तक नहीं देता था। लेकिन दीपू के पढ़ते वक्त वे रेडियो के सुर में सुर मिलाकर घर सिर पर उठा लेते थे। दीपू के दोस्त दिन भर आते-जाते रहते। कोई उन्हें बैठने तक को नहीं कहता पर दीदी या भैया के पास कोई आता तो उसे बाकायदा नमस्ते करनी पड़ती। मम्मी उनके लिए ढेर सारा नाश्ता बनाती रहतीं और दीपू बैरा बनकर रसोईघर से ड्राइंग रूम तक नाचता रहता। दीदी की सहेलियों के पास किताबें या चिट्ठियाँ पहुँचाना और भैया के दोस्तों के लिए चाय-नाश्ता तो रोज का ही काम था।

शिक्षण संकेत - ■ कहानी को बच्चों के समक्ष हाव-भाव के साथ सुनाइए।

घर में एक ही अलार्म टाइमपीस था और वह बारी-बारी से दीदी या भैया के सिरहाने रखा रहता। दीपू की बड़ी साध थी कि हम भी सिरहाने घड़ी रखकर सोएँ और उसकी सुरीली आवाज के साथ दिन की शुरुआत करें। उसके भाग्य में तो सुबह आठ बजे पापा की डाँट खाकर उठना ही लिखा था।

दीदी और भैया की तरह उसके पास भी कलाई घड़ी होती तो भी कोई बात थी। वे लोग बड़े थे, घर की हर अच्छी चीज पर अपना ही हक जताते थे। उसे ताज्जुब होता - इन लोगों की परीक्षाएँ क्या रोज चलती ही रहती हैं, जब देखो तभी चार बजे से उठकर पढ़ने बैठ जाएँगे!

एक दिन तो वह जिद पर अड़ गया। उसके स्कूल में दूसरे दिन इंस्पेक्टर आने वाले थे। उसने आते ही जोरदार शब्दों में ऐलान कर दिया - ''आज घड़ी मैं ले कर सोऊँगा। क्या हमें पढ़ाई नहीं करनी होती? जब देखो तब इन्हीं की शान चलती है!''

दीदी कहने लगीं, ''कितने बजे उठना है? मैं जगा दूँगी!''

वाह साहब, दूसरों ही से कहना होता, तो मम्मी से न कहते। कम-से-कम प्यार से तो जगाएँगी।

आखिर मम्मी को ही दया आ गई। बोलीं, ''शीलू, तेरी तो आज परीक्षा खत्म हो गई है। कल तो तुझे जल्दी नहीं उठना है। एकाध बार दीपू का भी मन रख लिया करो।''

मम्मी की सिफारिश काम कर गई। रात को घड़ी वाला स्टूल उसके सिरहाने था। उसे तो खुद चाबी भरने की इच्छा थी, पर दीदी का चेहरा देखकर चुप कर गया। घड़ी मिल रही थी, यही बहुत था।

रात भर उसे अलार्म के सपने आते रहे। उसने अपनी सारी किताबें तकिये के नीचे रख ली थीं। टेबल लैंप लगाने की भी सोच रहा था, पर डर के मारे चुप रहना पड़ा।

वह पाँच का अलार्म लगवाकर सोया था, पर सुबह उठा तो धूप रोज की तरह कमरे में फैल चुकी थी। सिरहाने देखा, घड़ी स्टूल समेत गायब थी। समझ गया, दीदी ने उसके सो जाने के बाद यह कारस्तानी

की होगी।

“मम्मी...।” वह जोर से चिल्लाया।

“क्या है रे?” रसोई से मम्मी की चिड़चिड़ी आवाज आई। सुबह-सुबह उनके पास फालतू वक्त नहीं होता।

“मेरी घड़ी कहाँ है?” कमरे में कंघी करती हुई दीदी की ओर संदेह-भरी नजरों से देखते हुए वह चिल्लाया। “घड़ी तो राजा भैया, परलोक सिधार गई!” दीदी की आवाज में इतनी मिठास थी कि दीपू घबरा गया।

“क्या हुआ?” उसने हैरानी से पूछा।

“होना क्या था। रात को आपने वह किक मारी कि वह हाई जंप कर गई।” शेव करते हुए भैया ने जवाब दिया।

“लेकिन....लेकिन वह तो सिरहाने रखी थी, किक कैसे लगी?” दीपू की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

“लेकिन आपका सिर तो सिरहाने नहीं था।” भैया ने मुँह बनाते हुए कहा, “सारी रात तो बिस्तर पर इधर से उधर चहलकदमी करते रहते हो!”

“ओफ्फ, क्या जोर से आवाज हुई थी गिरने की। सारा घर जाग गया था, सिवाय आपके।” दीदी ने फिर चिढ़ाया।

“लाड़ करने की भी हद होती है।” पापा मम्मी पर झल्ला रहे थे, “जरा-सी जिद के लिए घड़ी का सत्यानाश करवा दिया। पन्द्रह-बीस रुपये से कम नहीं लगेंगे सुधरवाने में।”

दीपू इस चौतरफा हमले से एकदम रुँआसा हो गया। आँगन में पड़ी खटिया पर चुपचाप जा बैठा।

"क्यों, क्या हुआ रे?" तुलसी के चौरे के पास माला जपती दादी ने पूछा।

"सोते में मुझसे घड़ी टूट गई है और सब के सब मुझे डाँट रहे हैं!" उसे अब सचमुच रोना आ रहा था।

"तू भी तो निरा बेवकूफ है!" दादी ने उससे प्यार करते हुए कहा, "जरा-सी घड़ी के पीछे सबकी चिरौरी करता फिरता है!"

"मुझे पढ़ने के लिए सबेरे उठना जो होता है!"

"अच्छा, यह बता कि जब घड़ियाँ नहीं होती थीं तब क्या लोग जगते नहीं थे? मुझे ही देख, कार्तिक में रोज चार बजे नहाती हूँ, बारहों महीने नहा-धोकर लक्ष्मीनारायण की आरती में पहुँच जाती हूँ। सो मैं क्या घड़ी लेकर सोती हूँ?"

दादी की बात ने उसे सोचने के लिए मजबूर कर दिया। "सच, दादी! तुम कैसे इतने सबेरे जग जाती हो?"

"एक बात है, किसी से कहेगा तो नहीं? मेरी तरकीब अपने पास ही रखना।"

दीपू ने सिर हिला दिया।

दादी उसे अपने बिस्तर के पास ले गईं। बोली, "देख, यह जो मेरा तकिया है न, इससे रात को सोते समय कह देती हूँ, 'भई तकियेराम, सुबह चार बजे जगा देना।' बस, यह जगा देता है!"

दीपू ने तरकीब सुनी तो आश्चर्य से उसकी आँखें फैल गईं। दिन भर यही इंतजार रहा कि कब रात हो तो वह तकिये का करिश्मा देखे। रात को उसने सबकी नजर बचाकर तकिये से अपनी बात कही और इत्मीनान से सो गया। सुबह उठा तो वही आठ बज रहे थे। दूसरे दिन भी यही हाल रहा, फिर तीसरे-चौथे दिन भी। फिर उसने यह नुस्खा ही मन से निकाल दिया। समझ गया दादी की भूत-प्रेतों और परियों की कहानियों की तरह यह तरकीब भी निरी गप्प ही थी।

एक शनिवार को उसे फिर घड़ी की जरूरत महसूस हुई। पर इस बार उसने जिद नहीं की, वरन् दीदी से कहा, "दीदी, सुबह मुझे पाँच बजे जगा दोगी?"

"कल! ना, बाबा, कल तो इतवार है! कल तो अपने राम आठ बजे के पहले नहीं उठने के।" दीदी ने कहा।

"और कल तुम्हें कहाँ तीर मारने जाना है?" भैया के इस प्रश्न पर उसे बड़ा गुस्सा आया। हमेशा की तरह मम्मी ने ही उसका पक्ष लिया। बोलीं, "अरे, कल उसकी ट्रिप जा रही है। साँची जाएँगे सब बच्चे। मुझे तो सारा काम निपटाते रात को इतनी देर हो जाती है कि सुबह की हामी नहीं भर सकती।"

"तो दादी से कह न, दीपू! पाँच क्या चार बजे ही जगा देंगी। पता नहीं ये बूढ़े लोग इतने सबेरे से

शिक्षण संकेत - ■ विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर संवादों को पढ़वाइए।

क्यों उठ बैठते हैं?'' कहती हुई दीदी अपनी रजाई में दुबक गईं।

दादी घर पर थीं नहीं। बारह बजे से पहले उनके कीर्तन से लौटने की आशा भी नहीं थी। हताश होकर दीपू ने तकिये का आसरा लिया, ''तकिये भाई, मेहरबानी करके कल तो जगा ही देना, ठीक पाँच बजे। सात बजे तो बस भी निकल जाएगी।''

कैसा आश्चर्य था! सुबह जब उसकी आँख खुली तो चारों ओर अँधेरा ही था। वह तो समझा कि रात ही है और डर के मारे दम साधे चुपचाप पड़ा रहा। थोड़ी देर बाद ही दादी के कमरे से 'रघुपति राघव राजाराम' की आवाज आई और उसको कुछ धीरज बँधा। दौड़कर दादी के कमरे में गया। वह अभी रजाई में ही थीं।

''दादी, मैं तुमसे पहले जग गया!'' उसने विजयी मुद्रा में कहा।

''क्यों रे, इतनी जल्दी?'' दादी उसे रजाई में लपेटते हुए बोलीं।

''आज पिकनिक पर जो जाना है। पता है, हम लोग साँची जाएँगे। और मम्मी को देखो, अब तक सो रही हैं। खाना कब बनेगा? सात बजे पहुँच जाना है स्कूल।'' दीपू ने शिकायत की।

''तो अभी तो बहुत देर है। अभी तो पाँच ही बजे हैं!''

''पाँच!'' दीपू खुशी से चिल्लाया, ''तब तो तकिये भाई ने ठीक समय पर जगा दिया!''

''मैं कहती न थी।''

''कहाँ, दादी.....'' दीपू ने शिकायत की, ''इतने दिनों तक तो एक बार भी नहीं जगाया।''

दादी ने उसे और भी पास सटाते हुए कहा, ''दीपू बेटा, तू तो पागल हो गया है। तकिया भी कहीं बोलता है!'' असली अलार्म तो हमारे दिल में होता है। जब हमें जरूरी उठना होता है तो यह हमें जगा देता है। घड़ी की आवाज तो तू बन्द भी कर सकता है, पर इसकी आवाज बन्द नहीं होती, जगाकर ही छोड़ती है!

और इस अनोखी घड़ी का राज पाकर दीपू बहुत खुश था।

मालती जोशी

श्रीमती मालती जोशी देश की स्थापित कथाकारों में से एक हैं। म.प्र. में अपनी अलग पहचान बनाने वाली महिला कथाकार की कहानियाँ बाल-कथा साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। बाल कहानियों में जहाँ बाल मनोविज्ञान का बारीकी से अंकन हुआ है, वहीं उनके नैतिक विकास का भी पूरा ध्यान रखा गया है। 'दादी की घड़ी' कहानी उन्हीं में से एक है।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

शब्दार्थ

लाड़ला	-	अन्याय	-	हताश	-
निरे	-	सुर में सुर मिलाना	-	चौतरफा	-

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

(क) दीपू को दीदी और भैया की तरह कौन-कौन सी सुविधाएँ नहीं मिल पाती थीं?

(ख) बिना अलार्म घड़ी के दादी सुबह कैसे उठ जाती थीं?

(ग) पिकनिक पर जाने के लिए दीपू समय पर कैसे जाग गया?

(घ) दादी ने अनोखी घड़ी का क्या राज बताया?

2. **दादी ने दीपू को सुबह समय पर उठने के लिए क्या तरकीब सुझाई? (सही विकल्प चुनिए)**

(क) दीदी से सुबह जगाने के लिए कहो।

(ख) मुर्गे की आवाज सुनकर उठो।

(ग) तकिए से कहो ''तकिया राम सुबह चार बजे जगा देना''।

(घ) अलार्म घड़ी रखकर सो जाना।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए -**

ईर्ष्या, खूँटी, चिट्ठियाँ, ताज्जुब, इंस्पेक्टर, अलार्म, चिरौरी, कार्तिक, नुस्खा, ट्रंक

2. **निम्नलिखित वाक्यों में से मुहावरे छाँटकर लिखिए -**

(क) दीपू को हर तरह की बेगार ढोनी पड़ती थी।

(ख) दीपू बेचारा मम्मी के ट्रंक पर ही गुजारा कर लेता था।

(ग) घड़ी तो राजा भैया पहले ही परलोक सिधार गई।

(घ) डर के मारे दीपू दम साधे पड़ा रहा।

3. **निम्नलिखित शब्दों में से हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के शब्द छाँटकर लिखिए -**

चॉक, एवज, मुसीबत, रौब, क्लास, खबर, ख्याल, मॉनीटर, अन्याय, दखल, डेस्क, सुर, बाकायदा, अलार्म, ताज्जुब, परीक्षा, इंस्पेक्टर, टर्मिनल, दया, लेम्प, परलोक

हिन्दी	अंग्रेजी	उर्दू

ध्यान से पढ़िए -

1. दीपू चौथी कक्षा में पढ़ता है और अपनी कक्षा का मॉनीटर भी है।

इस वाक्य में **भी** निपात का प्रयोग अतिरिक्त विशेषता दर्शाता है।

निपात - हिन्दी में कुछ ऐसे अव्यय शब्द हैं, जो वाक्य में किसी शब्द या पद पर जोर (बल) देने के लिए उस शब्द या पद के बाद आते हैं, इस प्रकार के शब्दों को निपात कहते हैं। उदाहरण - ही, भी, तो, मात्र, तक, न, नहीं, मत, पर।

4. **इस प्रकार के 'भी' और 'पर' निपात वाले वाक्य पाठ से छाँटकर लिखिए।**

5. **निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उदाहरण के अनुसार उन्हें छोटा करके लिखिए -**

उदाहरण - दीदी-भैया जब पढ़ते होते, तो घर में कोई उसे ऊँची आवाज में बोलने तक नहीं देता था।

दीदी-भैया के पढ़ते समय कोई उसे ऊँची आवाज से नहीं बोलने देता था।

(अ) सोते में मुझसे घड़ी टूट गई और सबके सब मुझे डाँटने लगे।

(ब) वह तो समझा अभी रात है और डर के मारे दम साधे चुपचाप पड़ा रहा।

6. **उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए -**

उदाहरण-
- पता है, हम लोग साँची जाएँगे।
- न जाने हम कब साँची जाएँगे।

शिक्षण संकेत - ■ कहानी का सार बच्चों की सहभागिता से पूछिए।

(क) पता है, कल हमने मलाई खाई थी।

(ख) पता है, कल आसमान में गुब्बारे उड़े थे।

(ग) पता है, तकिया मुझे जगाएगा।

(घ) पता है, पापा-मम्मी मुझे समझ पाएँगे।

7. निम्नलिखित वाक्यों में शब्दों को सही क्रम में लिखिए -

(क) है अपनी भी मॉनीटर का कक्षा दीपू।

(ख) गई सिधार घड़ी राजा परलोक भैया।

(ग) टाइमपीस था अलार्म ही एक घर में।

(घ) अलार्म तो दिल है होता असली में हमारे।

8. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) दीपू से सभी..................करते थे।

(i) ईर्ष्या (ii) घृणा (iii) द्वेष (iv) लड़ाई

(ख) दीपू की.........................तो पापा के पास बैठने पर ही निकल जाती थी।

(i) पूरी जान (ii) जान (iii) दम (iv) आधी जान

(ग) 'स्टूल' शब्द............है

(i) तद्‌भव (ii) तत्‌सम (iii) देशज (iv) विदेशी

(घ) दीपू पिकनिक के लिए.........................जा रहा था।

(i) साँची (ii) भोपाल (iii) विदिशा (iv) पचमढ़ी

योग्यता विस्तार

1. दीपू की जगह अगर तुम होते तो सुबह उठने के लिए क्या युक्ति लगाते?
2. बच्चों से जुड़ी कोई अन्य रोचक कहानी याद कर कक्षा में सुनाइए।
3. कहानी का नाट्य रूपांतर कर बाल सभा या किसी उत्सव में प्रस्तुत कीजिए।

सच्चे हृदय से निकला हुआ वचन कभी निष्फल नहीं होता।